

अण्डमान निकोबार द्वीप समाचार



रजि.न.34300/80 | संख्या 311 | श्री विजयपुरम, सोमवार, 23 नवम्बर 2026 | web: dt.andamannicobar.gov.in | 2.00 रूपए







अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के माननीय उप राज्यपाल डॉ. दिनेश शर्मा जी से आज लोक निवास, श्री विजयपुरम, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में ज़िला एवं सत्र न्यायालय, अण्डमान के विशेष लोक अभियोजकों के प्रतिनिधिमंडल ने शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर प्रतिनिधिमंडल द्वारा माननीय न्यायालय में लंबित वादों की वर्तमान स्थिति से अवगत कराया गया तथा न्यायिक प्रक्रिया से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई।









अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के माननीय उप राज्यपाल डॉ. दिनेश शर्मा जी से आज लोक निवास, श्री विजयपुरम, अण्डमान में श्री विजयपुरम नगरपालिका परिषद के पार्षद श्री आर. सोमेश्वर राव एवं उनके प्रतिनिधिमंडल ने शिष्टाचार भेंट कर स्थानीय समस्याओं से अवगत कराया, जिसके शीघ्र निस्तारण के निर्देश दिए गए।

सरस आजीविका मेला के आठवें दिन लगभग 3 लाख रुपये की बिक्री, 1,200 दर्शकों ने लिया मेले का आनंद



श्री विजयपुरम, 22 नवंबर।

अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के ग्रामीण विकास, पंचायती राज संस्था एवं शहरी स्थानीय निकाय निदेशालय द्वारा यहां के वीआईपी रोड स्थित प्रदर्शनी मैदान में आयोजित सरस आजीविका मेला 2026 के आठवें दिन भी लोगों में उत्साह और उमंग देखने को मिली। शाम के सांस्कृतिक कार्यक्रम में द्वीपसमूह के विभिन्न क्षेत्रों से आए प्रतिभागियों ने एकल गायन, सामूहिक नृत्य एवं संगीत की प्रस्तुतियों से दर्शकों का मनोरंजन किया।

यह मेला स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी), ग्रामीण महिला उद्यमियों तथा पारंपरिक कारीगरों को अपने उत्पादों को प्रदर्शित करने, स्थानीय हस्तशिल्प को बढ़ावा देने और व्यापक विपणन के अवसर तलाशने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान कर रहा है। मेले में लगाए गए विभिन्न स्टॉलों पर प्रदर्शित स्थानीय स्तर पर निर्मित वस्तुओं, हस्तशिल्प एवं पारंपरिक उत्पादों की विविधता में आगंतुकों ने विशेष रुचि दिखाई। मेले के आठवें दिन लगभग 3 लाख रुपये की कुल बिक्री दर्ज़ की गई, जबकि लगभग 1,200 आगंतुकों ने मेले का भ्रमण किया। इस दिन आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में कुल आठ प्रस्तुतियां दी गईं, जिनमें प्रोथरापुर, लिटिल अण्डमान, रंगत एवं कार निकोबार के एकल गायकों, नृत्य कलाकारों तथा संगीतकारों ने भाग लिया। अपनी प्रदर्शनियों एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से सरस आजीविका मेला ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देने, स्वयं सहायता समूहों की आजीविका को सशक्त बनाने तथा सांस्कृतिक आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करने में निरंतर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार यह मेला 29 नवंबर, 2026 तक जारी रहेगा। आम जनता से अपील की गई है कि वे मेले में पहुंचकर ग्रामीण महिला उद्यमियों एवं कारीगरों के प्रयासों को प्रोत्साहित करें तथा उनके उत्पादों को समर्थन प्रदान करें।

'अनिम्स' में विश्व रोगाणुरोधी प्रतिरोध जागरूकता सप्ताह 2026 का शुभारंभ

श्री विजयपुरम, 22 नवंबर।

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह चिकित्सा संस्थान (अनिम्स) के सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग द्वारा 18 नवंबर, 2026 को जी.बी. पंत अस्पताल, श्री विजयपुरम के ओपीडी एवं पंजीकरण परिसर में विश्व रोगाणुरोधी प्रतिरोध जागरूकता सप्ताह (डब्ल्यूएएडब्ल्यू) 2026 का शुभारंभ किया गया।

इस कार्यक्रम का आयोजन वर्ष 2026 के वैश्विक विषय "एक स्वास्थ्य, एक कार्रवाई : रोगाणुरोधी प्रतिरोध को अभी रोकें" के अंतर्गत किया गया। इस विषय के माध्यम से रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) से निपटने के लिए मानव, पशु एवं पर्यावरण स्वास्थ्य क्षेत्रों में सामूहिक प्रयासों के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

उद्घाटन समारोह में 'अनिम्स' के निदेशक डॉ. मुकेश त्रिपाठी, जी.बी. पंत अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. प्रगथीश तथा 'अनिम्स' के डीन (शैक्षणिक) डॉ. अजय राज उपस्थित रहे। कार्यक्रम में 'अनिम्स' के विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्षों, संकाय सदस्यों, नर्सिंग अधिकारियों एवं कर्मचारियों, स्नातक स्तर के एमबीबीएस एवं नर्सिंग विद्यार्थियों तथा अन्य स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों ने भी भाग लिया।

कार्यक्रम का औपचारिक शुभारंभ गणमान्य अतिथियों द्वारा विशेष रूप से तैयार की गई 'गो ब्लू अभियान–प्रतिज्ञा दीवार' पर एएमआर जागरूकता संबंधी अपनी प्रतिज्ञाएं अंकित करके किया गया। यह रोगाणुरोधी प्रतिरोध से मुकाबला करने तथा एंटीबायोटिक दवाओं के ज़िम्मेदारीपूर्वक उपयोग को बढ़ावा देने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का प्रतीक था।



'अनिम्स' के निदेशक डॉ. मुकेश त्रिपाठी ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए रोगाणुरोधी प्रतिरोध के संबंध ा में अपने महत्वपूर्ण विचार साझा किए। उन्होंने आम जनता को इस बढ़ती जनस्वास्थ्य चुनौती के प्रति जागरूक किया तथा एंटीबायोटिक दवाओं के ज़िम्मेदारीपूर्वक उपयोग और एएमआर से मुकाबला करने के लिए सामूहिक प्रयासों के महत्व पर बल दिया। इसके बाद सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग की कार्यवाहक विभागाध्यक्ष डॉ. श्वेता वी. आर. ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया तथा विश्व रोगाणुरोधी प्रतिरोध जागरूकता सप्ताह के महत्व पर प्रकाश डाला।

'अनिम्स' की एएमआर नोडल अधिकारी डॉ. के. स्नेहा ने

शेष पृष्ठ 4 पर

द्वीप पर्यटन महोत्सव–2026 का हिस्सा बनें : स्टॉल आवंटन हेतु आवेदन आमंत्रित

श्री विजयपुरम, 22 नवंबर।

द्वीप पर्यटन महोत्सव, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के प्रमुख वार्षिक आयोजनों में से एक है। यह महोत्सव द्वीपसमूह की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, खान–पान की विविधता, कलात्मक परंपराओं तथा उद्यमशीलता की क्षमता को प्रदर्शित करने के लिए एक जीवंत मंच प्रदान करता है। इस महोत्सव में बड़ी संख्या में आगंतुकों, पर्यटकों एवं स्थानीय निवासियों की भागीदारी होती है। यह उद्यमियों, व्यापारियों, शिल्पकारों एवं विक्रेताओं को अपने उत्पादों का प्रदर्शन करने, अपनी सेवाओं का प्रचार–प्रसार करने, व्यावसायिक अवसरों का लाभ उठाने तथा व्यापक जनसमूह तक पहुंच बनाने का एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान करता है।

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन का सूचना, प्रचार एवं पर्यटन निदेशालय इच्छुक होटल संचालकों, रेस्तरां मालिकों, निजी प्रतिष्ठानों, खाद्य विक्रेताओं, स्वयं सहायता समूहों (ग्रामीण विकास विभाग के माध्यम से) तथा अन्य पात्र प्रतिभागियों से द्वीप पर्यटन महोत्सव (आईटीएफ)–2026 के अंतर्गत खाद्य स्टॉल, सामान्य स्टॉल, कियोस्क एवं खुले स्थानों के आवंटन हेतु आवेदन आमंत्रित

शेष पृष्ठ 4 पर

समुद्री साहसिक पर्यटन एवं सांस्कृतिक संबंधों पर आसियान–भारत सम्मेलन में भागीदारी के लिए स्थानीय पर्यटन संचालकों से आवेदन आमंत्रित

श्री विजयपुरम, 22 नवंबर।

अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के पर्यटन निदेशालय ने 3 एवं 4 दिसंबर, 2026 को स्वराज द्वीप में आयोजित होने वाले आगामी 'समुद्री साहसिक पर्यटन एवं सांस्कृतिक संबंधों पर आसियान–भारत सम्मेलन' में भाग लेने के लिए स्थानीय टूर ऑपरेटरों, क्रूज़ संचालकों तथा होटल व्यवसायियों से आवेदन आमंत्रित किए हैं।

इस प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय आयोजन में आसियान सदस्य देशों और भारत के प्रतिनिधि, राजनयिक तथा उद्योग जगत के प्रमुख व्यक्ति एकत्रित होंगे। सम्मेलन का उद्देश्य क्रूज़ एवं हवाई संपर्क, गोताखोरी के पर्यटन स्थल, नीली अर्थव्यवस्था, समुद्री साहसिक गतिविधियां, सतत पारिस्थितिकी, बैठकें, प्रोत्साहन यात्राएं, सम्मेलन एवं प्रदर्शनियां (एमआईसीई) तथा साझा सांस्कृतिक विरासत जैसे प्रमुख विषयों पर क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देना है। विषयगत सत्रों के साथ–साथ सम्मेलन में विशेष व्यावसायिक बैठकें (बी2बी), पर्यटन व्यापार प्रदर्शनी, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा मेल–मिलाप भोज भी आयोजित किए जाएंगे। इससे स्थानीय हितधारकों को अंतरराष्ट्रीय एवं घरेलू यात्रा खरीदारों के समक्ष अपने उत्पादों और सेवाओं को प्रदर्शित करने का उत्कृष्ट अवसर मिलेगा।

बी2बी विचार–विमर्श के दौरान प्रभावी सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए भाग लेने वाले संगठनों को प्रोत्साहित किया गया है कि वे अपने मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ), प्रबंध निदेशक (एमडी) अथवा समान स्तर के किसी वरिष्ठ प्रतिनिधि को नामित करें, जिसे मौके पर ही व्यावसायिक निर्णय लेने का अधिकार प्राप्त हो।

भागीदारी एवं प्रदर्शनी शुल्क का विवरण

➪ प्रतिनिधि/भागीदारी शुल्कः प्रति प्रतिभागी 10,000 रुपये।

➪ प्रदर्शनी स्टॉल/यात्रा डेस्क शुल्कः पर्यटन उत्पादों एवं सेवाओं के प्रदर्शन के लिए प्रति स्टॉल 10,000 रुपये।

➪ शुल्क में छूटः प्रदर्शनी स्टॉल व यात्रा डेस्क स्थापित करने का विकल्प चुनने वाले हितधारकों को अलग से देय 10,000 रुपये के प्रतिनिधि व भागीदारी शुल्क से छूट दी जाएगी।

भुगतान का माध्यम एवं आवेदन जमा करने की प्रक्रिया :

इच्छुक स्थानीय टूर ऑपरेटरों, क्रूज़ संचालकों तथा होटल व्यवसायियों को निर्धारित आवेदन पत्र पूर्ण रूप से भरकर

शेष पृष्ठ 4 पर

प्लास्टिक पैकेजिंग से जुड़े प्रतिष्ठानों के लिए ईपीआर पोर्टल पर पंजीकरण अनिवार्य

श्री विजयपुरम, 22 नवंबर।

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन (संशोधन) नियम, 2022, दिनांक 16 फरवरी, 2022 के माध्यम से संशोधित प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 की अनुसूची–II के अंतर्गत प्लास्टिक पैकेजिंग के लिए विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (ईपीआर) संबंधी दिशा–निर्देश लागू किए हैं। इसका उद्देश्य प्लास्टिक पैकेजिंग के लिए विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (ईपीआर) व्यवस्था के कार्यान्वयन को सुगम बनाना है।

इस संबंध में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) ने प्लास्टिक पैकेजिंग के लिए विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (ईपीआर) व्यवस्था के अंतर्गत आने वाली इकाइयों के लिए संशोधित प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के तहत अनिवार्य पंजीकरण की आवश्यकता को पुनः स्पष्ट किया है।

तदनुसार, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में कार्यरत सभी संबंधित प्रतिष्ठानों को सूचित किया गया है कि जहाँ लागू हो, निम्नलिखित श्रेणियों की इकाइयों के लिए सीपीसीबी द्वारा विकसित साझा ईपीआर पोर्टल पर पंजीकरण कराना अनिवार्य हैः

उत्पादक (पी): इसमें सूक्ष्म एवं लघु उद्यम भी शामिल हैं।

➪ आयातक (आई): प्लास्टिक पैकेजिंग एवं प्लास्टिक कच्चे माल के आयातक।

शेष पृष्ठ 4 पर

विम्बर्लीगंज ज़िला पुस्तकालय में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह का समापन

विम्बर्लीगंज, 22 नवंबर।

दक्षिण अण्डमान के विम्बर्लीगंज स्थित ज़िला पुस्तकालय में 14 से 20 नवंबर तक आयोजित राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह–2026 का सप्ताहव्यापी समारोह आज विशिष्ट अतिथियों, शिक्षा विभाग के अधिकारियों, शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं पुस्तकालय सदस्यों की उपस्थिति में समापन समारोह के साथ संपन्न हुआ।



इस अवसर पर दक्षिण अण्डमान ज़िला परिषद के अध्यक्ष श्री पी. उमर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि श्री एस. पंकजाक्षन नायर, डीडीई (कार्मिक) ने सम्मानित अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शिरकत की। सप्ताह के दौरान विम्बर्लीगंज अंचल के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों और शिक्षकों ने विभिन्न साहित्यिक एवं सह–पाठ्यक्रम प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार इस आयोजन से पुस्तकालय की सदस्यता में भी वृद्धि हुई और यह बढ़कर 37 प्रतिशत हो गई, जिसमें विम्बर्लीगंज बाज़ार क्षेत्र के 30 नए सदस्य शामिल हैं। आयोजकों ने ज़िला पुस्तकालय, विम्बर्लीगंज के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री एन. के. हमसा, भाग लेने वाले विद्यालयों, शिक्षकों, विद्यार्थियों, पुस्तकालय सदस्यों तथा विम्बर्लीगंज की डीईओ श्रीमती ज्योति के सहयोग एवं योगदान की सराहना की। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। इस अवसर पर क्षेत्र में पढ़ने की आदत को प्रोत्साहित करने तथा पुस्तकालय संस्कृति को और अधिक सुदृढ़ बनाने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई गई।

प्लास्टिक पैकेजिंग से जुड़े प्रतिष्ठानों के लिए पृष्ठ 1 का शेष

➪ ब्रांड स्वामी (बीओ): अपने ब्रांड के अंतर्गत उत्पादों की बिक्री करने वाले प्रतिष्ठान।

➪ निर्माता (एम): प्लास्टिक कच्चे माल तथा खाद योग्य या जैव–निम्नीकरणीय प्लास्टिक से बनी वस्तुओं के निर्माता।

➪विक्रेता (एस): लागू प्रावधानों के अंतर्गत आने वाले विक्रेता।

➪ प्लास्टिक अपशिष्ट प्रसंस्करणकर्ता (पीडब्ल्यूपी): पुनर्चक्रण, अपशिष्ट से ऊर्जा उत्पादन, अपशिष्ट से तेल उत्पादन तथा औद्योगिक खाद निर्माण में संलग्न इकाइयाँ।

उपर्युक्त सभी प्रतिष्ठानों को बिना किसी विलंब के आवश्यक पंजीकरण प्राप्त करना होगा। जिन प्रतिष्ठानों के लिए पंजीकरण अनिवार्य है, वे पंजीकरण के बिना अपना व्यवसाय संचालित नहीं कर सकेंगे।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने पोर्टल पर लेन–देन आधारित रिपोर्टिंग व्यवस्था को भी सुदृढ़ करने की घोषणा की है। अपंजीकृत इकाइयों से संबंधित खरीद एवं बिक्री के लेन–देन का विवरण दर्ज़ करने की सुविधा बंद कर दी जाएगी। हालाँकि, जहाँ लागू हो, सूक्ष्म एवं लघु श्रेणी के ब्रांड स्वामियों तथा प्लास्टिक अपशिष्ट प्रसंस्करणकर्ताओं (पीडब्ल्यूपी) से संबंधित लेन–देन को इससे छूट दी गई है।

अतः सभी संबंधित प्रतिष्ठानों को निम्नलिखित निर्देशों का पालन करने की सलाह दी जाती है:

1. जहाँ लागू हो, साझा ईपीआर पोर्टल पर तत्काल पंजीकरण कराएँ।
2. सुनिश्चित करें कि प्लास्टिक पैकेजिंग एवं प्लास्टिक अपशिष्ट से संबंधित सभी लेन–देन लागू नियामक आवश्यकताओं के अनुरूप हों तथा उनका विवरण पोर्टल पर विधिवत दर्ज़ किया जाए।
3. जहाँ लागू हो, अपने अपंजीकृत आपूर्तिकर्ताओं एवं खरीदारों को आवश्यक पंजीकरण प्राप्त करने के लिए सुनिश्चित करें।
4. लागू विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (ईपीआर) लक्ष्यों, लेन–देन रिपोर्टिंग संबंधी आवश्यकताओं तथा वार्षिक विवरणी दाखिल करने के दायित्वों को पूरा करें। इन प्रावधानों का अनुपालन नहीं करने पर संशोधित प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के तहत उचित कार्रवाई की जाएगी।

समुद्री साहसिक पर्यटन एवं सांस्कृतिक संबंधों पृष्ठ 1 का शेष

निर्धारित शुल्क के साथ जमा करना होगा। शुल्क का भुगतान 'मुख्य वित्तीय अधिकारी, अनिडको लिमिटेड' के पक्ष में आहरित मांग–पत्र (डिमांड ड्राफ्ट) के माध्यम से किया जाना है।

पर्यटन निदेशालय से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार सभी प्रकार से पूर्ण आवेदन पत्र तथा मांग–पत्र 25 नवंबर, 2026 को या उससे पहले पर्यटन निदेशालय, श्री विजयपुरम के योजना अनुभाग में जमा किए जाने चाहिए। प्रतिनिधियों एवं प्रदर्शनी स्टॉलों के लिए स्थान सीमित होने के कारण आवंटन पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर किया जाएगा। आवेदन पत्र प्राप्त करने तथा अन्य जानकारी के लिए हितधारक अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के पर्यटन विभाग के योजना अनुभाग से संपर्क कर सकते हैं।

द्वीप पर्यटन महोत्सव–2026 का हिस्सा बनें पृष्ठ 1 का शेष

करता है। यह आवंटन पूर्व निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार किया जाएगा। द्वीप पर्यटन महोत्सव–2026 का आयोजन 27 से 31 दिसंबर, 2026 तक यहां के वीआईपी रोड स्थित प्रदर्शनी मैदान में किया जाएगा। पारदर्शिता, निष्पक्षता एवं सभी आवेदकों को समान अवसर सुनिश्चित करने के उद्देश्य से स्टॉलों का आवंटन निर्धारित समिति द्वारा लॉटरी प्रणाली के माध्यम से किया जाएगा। यह प्रक्रिया निर्धारित नियमों एवं शर्तों के पूर्ण अनुपालन में संपन्न होगी।

सूचनना, प्रचार एवं पर्यटन निदेशालय से प्राप्त विज्ञप्ति में आवेदकों को सलाह दी गई है कि वे दिशा–निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा यह सुनिश्चित करें कि सभी आवश्यक दस्तावेज़, भुगतान एवं घोषणाएं आवेदन पत्र के साथ जमा की गई हों। अधूरे आवेदन तथा निर्धारित अंतिम तिथि एवं समय के बाद प्राप्त आवेदनों पर विचार नहीं किया जाएगा।

आवेदन जमा करने एवं स्टॉल आवंटन की प्रक्रिया से संबंधित महत्वपूर्ण तिथियां निम्नलिखित हैं:

क्र. सं.	विवरण	तिथि
1.	आधिकारिक वेबसाइट पर आवेदन पत्र उपलब्ध होने की तिथि	11.11.2026
2.	विधिवत भरे हुए आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि	25.11.2026
3.	समिति द्वारा लॉटरी के माध्यम से स्टॉलों का आवंटन	01.12.2026
4.	सफल आवेदकों को आवंटन पत्र जारी करना	12.12.2026

स्टॉलों की विभिन्न श्रेणियों, किराया शुल्क, सुरक्षा जमा राशि, आवेदन प्रक्रिया तथा लागू नियमों एवं शर्तों से संबंधित विस्तृत जानकारी सूचना, प्रचार एवं पर्यटन निदेशालय की आधिकारिक वेबसाइट के https://tourism.andamannicobar.gov.in/ अनुभाग में 11 नवंबर, 2026 से प्रकाशित की जाएगी।

आवेदक निर्धारित आवेदन पत्र डाउनलोड कर उसे विधिवत भरकर एवं हस्ताक्षरित करने के पश्चात आवश्यक किराया राशि, सुरक्षा जमा राशि तथा नियमों एवं शर्तों की हस्ताक्षरित पावती प्रति के साथ पर्यटन विभाग (संचालन अनुभाग), सूचना, प्रचार एवं पर्यटन निदेशालय, श्री विजयपुरम में 25 नवंबर, 2026 तक जमा कर सकते हैं। प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी बहुप्रतीक्षित द्वीप पर्यटन महोत्सव–2026 द्वीपसमूह की जीवंत संस्कृति, विविधतापूर्ण खान–पान, रचनात्मकता एवं उद्यमशीलता की भावना को एक मंच पर लाने का वादा करता है। सूचना, प्रचार एवं पर्यटन निदेशालय सभी संबंधित हितधारकों से इस महोत्सव में उत्साहपूर्वक भाग लेने तथा इसे भव्य, यादगार एवं शानदार ढंग से सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करने का आह्वान करता है। आवेदन प्रक्रिया एवं स्टॉल आवंटन से संबंधित किसी भी जानकारी के लिए इच्छुक आवेदक कार्यालय समय के दौरान प्रातः 9 बजे से सायं 5 बजे तक सूचना, प्रचार एवं पर्यटन निदेशालय के प्रबंधक (संचालन/पर्यटन) से संपर्क कर सकते हैं।

'अनिम्स' में विश्व रोगाणुरोधी प्रतिरोध पृष्ठ 1 का शेष

रोगाणुरोधी प्रतिरोध के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा एंटीबायोटिक दवाओं के ज़िम्मेदारीपूर्वक उपयोग की आदतों को प्रोत्साहित करने के महत्व पर ज़ोर दिया। उन्होंने 'एक स्वास्थ्य' की सहयोगात्मक अवधारणा के माध्यम से रोगाणुरोधी प्रतिरोध से मुकाबला करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने डब्ल्यूएएडब्ल्यू 2026 के सात दिवसीय कार्यक्रम की रूपरेखा भी प्रस्तुत की। इसके अंतर्गत शैक्षणिक, प्रशिक्षण एवं जागरूकता संबंधी विभिन्न गतिविधियों और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। इनमें पोस्टर, रंगोली, सूचना पत्रक, लघु वीडियो एवं जिंगल प्रतियोगिताएं, दूरदर्शन और आकाशवाणी केंद्र पर वर्ष 2026 के विषय पर सीधा कार्यक्रम तथा नर्सिंग कर्मचारियों के लिए कार्यशाला शामिल हैं। सप्ताह का समापन स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों के लिए सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) कार्यक्रम के साथ होगा। इसका उद्देश्य रोगाणुरोधी दवाओं के विवेकपूर्ण उपयोग, एंटीबायोटिक दवाओं के तर्कसंगत प्रयोग, एएमआर निगरानी तथा संक्रमण की रोकथाम एवं नियंत्रण को बढ़ावा देना और आम जनता में जागरूकता उत्पन्न करना है।

कार्यक्रम का एक प्रमुख आकर्षण सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग के कर्मचारियों द्वारा प्रस्तुत प्रभावशाली नुक्कड़ नाटक रहा। इस प्रस्तुति के माध्यम से रोगाणुरोधी प्रतिरोध, इसके दुष्परिणामों तथा एंटीबायोटिक दवाओं के ज़िम्मेदारीपूर्वक उपयोग के महत्व का संदेश प्रभावी ढंग से दिया गया। अस्पताल में उपस्थित आम जनता के बीच सरल, सहज और रोचक प्रस्तुति के माध्यम से जागरूकता उत्पन्न करने में यह नुक्कड़ नाटक विशेष रूप से सफल रहा।

उद्घाटन दिवस पर एमबीबीएस एवं नर्सिंग विद्यार्थियों के लिए पोस्टर प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। विद्यार्थियों



ने पूरे उत्साह के साथ इसमें भाग लिया तथा रोगाणुरोधी प्रतिरोध के संबंध में अपनी रचनात्मकता और समझ को जानकारीपूर्ण एवं विचारोत्तेजक पोस्टरों के माध्यम से प्रदर्शित किया। इस प्रतियोगिता ने विद्यार्थियों को एएमआर के प्रति जागरूकता फैलाने में सक्रिय योगदान देने का अवसर प्रदान किया।

'अनिम्स' का सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग इन द्वीपों के स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों एवं आम जनता को रोगाणुरोधी प्रतिरोध के बढ़ते खतरे के प्रति जागरूक करने तथा 'एक स्वास्थ्य' दृष्टिकोण के माध्यम से सामूहिक कार्रवाई को प्रोत्साहित करने का उद्देश्य रखता है, ताकि एंटीबायोटिक दवाओं की प्रभावशीलता को भविष्य के लिए सुरक्षित रखा जा सके।

यहां जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि विश्व रोगाणुरोधी प्रतिरोध जागरूकता सप्ताह 2026 के आयोजन के माध्यम से 'अनिम्स' एवं जी.बी. पंत अस्पताल ने रोगी सुरक्षा को आगे बढ़ाने, रोगाणुरोधी दवाओं के तर्कसंगत उपयोग को प्रोत्साहित करने तथा 'एक स्वास्थ्य' दृष्टिकोण के माध्यम से रोगाणुरोधी प्रतिरोध के विरुद्ध वैश्विक अभियान में योगदान देने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई है।

"नशा मुक्त भारत" पर हुईं चित्रकला एवं पेंटिंग प्रतियोगिताएं

श्री विजयपुरम, 22 नवम्बर।

स्वराज द्वीप पुलिस थाना द्वारा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, गोविंद नगर, स्वराज द्वीप में 19 नवम्बर को 30 विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी के साथ "नशा मुक्त भारत" थीम पर चित्रकला एवं पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम दक्षिण अण्डमान ज़िला पुलिस द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के तहत चलाए जा रहे निरंतर प्रयासों के भाग के रूप में आयोजित किया गया था, ताकि युवाओं में मादक पदार्थों के सेवन के हानिकारक परिणामों के प्रति जागरूकता पैदा की जा सके और विद्यार्थियों को एक स्वस्थ, ज़िम्मेदार एवं नशा मुक्त समाज के निर्माण में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।



इस प्रतियोगिता ने विद्यार्थियों को चित्रकला और पेंटिंग के माध्यम से मादक पदार्थों के दुरुपयोग के हानिकारक प्रभावों पर अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और नशे की लत के खतरों, स्वस्थ जीवनशैली के महत्व तथा नशे से दूर रहने पर सार्थक संदेश प्रस्तुत करते हुए अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन किया। उनकी कलाकृतियों ने नशा मुक्त समाज के निर्माण के लिए जागरूकता और सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता को उजागर किया।

प्रतियोगिता के समापन पर श्री कथिरवन, भा.पु.से., एसडीपीओ, स्वराज द्वीप ने विजेता प्रतिभागियों की रचनात्मकता, उत्साह और प्रयासों को सराहते हुए उन्हें पुरस्कार और वरीयता प्रमाण–पत्र प्रदान किए। उन्होंने विद्यार्थियों के साथ संवाद भी किया, उनकी सक्रिय भागीदारी की सराहना की और उन्हें अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित रखने, सकारात्मक आदतें अपनाने, सभी प्रकार के मादक पदार्थों के सेवन से दूर रहने तथा ज़िम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपने मित्रों, परिवारों और व्यापक समुदाय में जागरूकता फैलाने में विद्यार्थियों की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी बल दिया और उनसे नशा मुक्त भारत अभियान के दूत के रूप में कार्य करने का आग्रह किया।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार यह कार्यक्रम एक सकारात्मक संदेश के साथ संपन्न हुआ, जिसने इस बात को और सुदृढ़ किया कि बच्चों और युवाओं में जागरूकता मादक पदार्थों के दुरुपयोग को रोकने तथा एक स्वस्थ, सुरक्षित और नशा मुक्त समाज के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

जेएनआरएम में नवनिर्वाचित छात्र परिषद के पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित

श्री विजयपुरम, 22 नवंबर।

जवाहरलाल नेहरू राजकीय महाविद्यालय (जेएनआरएम), श्री विजयपुरम में 20 नवंबर, 2026 को महाविद्यालय की व्याख्यान दीर्घा में नवनिर्वाचित छात्र परिषद के पदाधिकारियों के लिए शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. पर्ल देवदास ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को शपथ दिलाई तथा उन्हें औपचारिक रूप से उनके संबंधित दायित्वों की ज़िम्मेदारी सौंपी। समारोह में महाविद्यालय की छात्र परिषद निर्वाचन समिति, छात्र परिषद निर्वाचन शिकायत निवारण प्रकोष्ठ तथा छात्र परिषद चुनाव के पर्यवेक्षक उपस्थित थे।

यहां प्राप्त प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस समारोह के साथ नवनिर्वाचित छात्र परिषद का कार्यकाल प्रारंभ हुआ, जिसे छात्र समुदाय के हितों, आकांक्षाओं एवं समस्याओं का प्रतिनिधित्व करने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है। प्राचार्या ने नेतृत्व क्षमता, अनुशासन, उत्तरदायित्व, सत्यनिष्ठा तथा महाविद्यालय की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के महत्व पर बल दिया।



उन्होंने निर्वाचित प्रतिनिधियों को विद्यार्थियों के कल्याण एवं महाविद्यालय के समग्र विकास के लिए आपसी सहयोग से कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस शपथ ग्रहण समारोह ने लोकतांत्रिक मूल्यों, विद्यार्थियों की सहभागिता, नेतृत्व क्षमता के विकास तथा महाविद्यालय परिसर में जीवंत एवं सकारात्मक वातावरण को बढ़ावा देने के प्रति महाविद्यालय की प्रतिबद्धता को पुनः पुष्ट किया।

नेताजी स्टेडियम में 3x3 ओपन बास्केटबॉल चैंपियनशिप 6 से 9 दिसंबर तक

श्री विजयपुरम, 22 नवंबर।

खेल एवं युवा कार्य निदेशालय द्वारा 6 से 9 दिसंबर तक नेताजी स्टेडियम स्थित बास्केटबॉल कोर्ट में 3x3 ओपन बास्केटबॉल चैंपियनशिप (पुरुष एवं महिला वर्ग) का आयोजन किया जाएगा। इस चैंपियनशिप का उद्देश्य युवाओं के बीच बास्केटबॉल खेल को बढ़ावा देना तथा बास्केटबॉल के शौकीनों एवं खिलाड़ियों को अपनी खेल प्रतिभा और कौशल प्रदर्शित करने के लिए एक प्रतिस्पर्धात्मक मंच प्रदान करना है। प्रतियोगिता के मैच 6 दिसंबर को शाम 3 बजे से शुरू होंगे। बास्केटबॉल के सभी इच्छुक खिलाड़ियों एवं टीमों से इस चैंपियनशिप में भाग लेने की अपील की गई है। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार अधिक जानकारी एवं प्रतियोगिता में भाग लेने से संबंधित पूछताछ के लिए इच्छुक खिलाड़ी बास्केटबॉल प्रशिक्षक से दूरभाष संख्या 9933210056 पर संपर्क कर सकते हैं।

दूरदर्शन का विशेष सीधा फोन–इन कार्यक्रम आज

श्री विजयपुरम, 22 नवंबर।

दूरदर्शन केंद्र, श्री विजयपुरम द्वारा अण्डमान तथा निकोबार पुलिस के सहयोग से साइबर अपराध एवं साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूकता फैलाने के साथ–साथ मादक औषधियों एवं मनःप्रभावी पदार्थों के हानिकारक प्रभावों के बारे में जानकारी देने के उद्देश्य से एक नए सीधे फोन–इन कार्यक्रम की शुरुआत की जा रही है। यह कार्यक्रम प्रत्येक सोमवार को शाम 6 बजे से शाम 6.30 बजे तक प्रसारित किया जाएगा। इस विशेष सीधे फोन–इन कार्यक्रम की पहली कड़ी 23 नवंबर, 2026 को प्रसारित होगी। इसमें अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (एएनटीएफ) श्री दीपेंद्र कुमार सिंह स्टूडियो में विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित रहेंगे तथा "युवाओं एवं विद्यार्थियों में नशीले पदार्थों का दुरुपयोग" विषय पर दर्शकों के प्रश्नों के उत्तर देंगे।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार दर्शक इस सीधे फोन–इन कार्यक्रम में भाग लेने के लिए दूरभाष संख्या 244745 अथवा 245662 पर संपर्क कर सकते हैं।

पेटेंट प्राप्त प्रौद्योगिकियों की खरीद एवं व्यावसायीकरण के लिए किसान, उद्यमी और उद्योग आमंत्रित

श्री विजयपुरम, 22 नवंबर।

आईसीएआर–केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर–सीआईएआरआई), श्री विजयपुरम, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह द्वारा कई नवीन प्रौद्योगिकियां विकसित की गई हैं। इनका उद्देश्य पारंपरिक खाद्य प्रसंस्करण गतिविधियों को सरल बनाना, शारीरिक श्रम एवं कठिनाई को कम करना, पशुओं के स्वास्थ्य में सुधार करना तथा प्राकृतिक संसाधनों का कुशल उपयोग सुनिश्चित करना है। ये पेटेंट प्राप्त प्रौद्योगिकियां बिक्री एवं व्यावसायीकरण के लिए उपलब्ध हैं।

इन प्रौद्योगिकियों में जनजातीय परिवारों में पारंपरिक खाद्य प्रसंस्करण गतिविधियों के लिए विशेष रूप से विकसित दो कम लागत वाले उपकरण, कृषि एवं पालतू पशुओं में बाह्य परजीवियों के नियंत्रण के लिए एक कीटनाशी मिश्रण तथा भूरे समुद्री शैवाल से कैल्शियम एल्जिनेट (फाइको–कॉलॉइड) तैयार करने की एक प्रक्रिया शामिल है।

1. द्वीप निकोबारी आलू छीलने का उपकरण : निकोबारी आलू के असमान एवं खुरदरे छिलके को आसानी से छीलने के लिए विकसित किया गया कम लागत वाला हाथ से संचालित उपकरण। यह छीलने की प्रक्रिया को सरल बनाता है तथा शारीरिक श्रम, प्रसंस्करण में लगने वाले समय और खाद्य पदार्थों की बर्बादी को कम करता है।

2. द्वीप पांडानस फल गूदा निष्कर्षक : पांडानस फलों के रेशेदार हिस्सों से खाने योग्य गूदे को अलग करने के लिए तैयार किया गया कम लागत वाला हाथ से संचालित स्टेनलेस स्टील का उपकरण। यह पारंपरिक खाद्य प्रसंस्करण गतिविधियों को सरल बनाता है तथा विशेष रूप से जनजातीय परिवारों में समय और श्रम की बचत करता है।

3. कृषि एवं पालतू पशुओं में बाह्य परजीवियों के नियंत्रण के लिए मिश्रण एवं विधि: कृषि एवं पालतू पशुओं में बाह्य परजीवियों, विशेष रूप से किलनी (टिक्स) के नियंत्रण के लिए एक नवीन कीटनाशी मिश्रण विकसित किया गया है। इसमें अंडनाशक, लार्वानाशक, निम्फनाशक तथा वयस्क परजीवियों को नष्ट करने के गुण हैं। इससे किलनी के संक्रमण को नियंत्रित करने और उससे होने वाले नुक़सान को कम करने में सहायता मिलती है।

4. भूरे समुद्री शैवाल से कैल्शियम एल्जिनेट (फाइको–कॉलॉइड) तैयार करने की प्रक्रिया: यह एक प्राकृतिक हाइड्रोजेल है, जिसे संशोधित निष्कर्षण प्रक्रिया के माध्यम से भूरे समुद्री शैवाल से तैयार किया जाता है। यह अपने भार से 1.7 गुना तक नमी धारण कर सकता है और धीरे–धीरे पौधों को पानी उपलब्ध कराता है। इससे पानी की हानि कम करने तथा मिट्टी और अन्य पौध उगाने वाले माध्यमों में पोषक तत्वों को बनाए रखने में सहायता मिलती है।

यहां प्राप्त प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि ये प्रौद्योगिकियां व्यावहारिक उपयोग, उद्यमिता और व्यावसायिक उपयोग के लिए नए अवसर प्रदान करती हैं, विशेष रूप से द्वीपीय समुदायों के लिए। इच्छुक किसानों, उद्यमियों, स्टार्टअप, स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी), उद्योगों तथा अन्य संगठनों को खरीद एवं व्यावसायीकरण के अवसरों के लिए आईसीएआर–सीआईएआरआई से संपर्क करने के लिए आमंत्रित किया गया है। अधिक जानकारी एवं पूछताछ के लिए निदेशक, आईसीएआर–सीआईएआरआई, श्री विजयपुरम, ईमेल director.ciari@icar.org.in से संपर्क करें।

सूचना, प्रचार और पर्यटन निदेशालय द्वारा प्रकाशित तथा प्रबन्धक, राजकीय मुद्रणालय द्वारा मुद्रित, वितरण तथा विज्ञापन के लिए फोन–229465, प्रधान सम्पादक (प्रभारी) पी. कैरल डी. सोणी
e-mail:dweepsamachar@gmail.com

9 महीने में एक करोड़ से अधिक एचपीवी टीकाकरण, माननीय उपराष्ट्रपति ने की सराहना

नई दिल्ली, 22 नवम्बर।

देश ने सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम के अपने प्रयासों में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। 'राष्ट्रीय एचपीवी टीकाकरण अभियान' के तहत, इसके शुरू होने के नौ महीने से भी कम समय में ह्यूमन पैपिलोमा वायरस (एचपीवी) वैक्सीन की 1 करोड़ से अधिक खुराकें दी जा चुकी हैं।

माननीय उपराष्ट्रपति श्री सीपी राधाकृष्णन ने इस उपलब्धि के लिए स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, राज्य सरकारों और सभी स्वास्थ्य कर्मियों की तारीफ की है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में उन्होंने लिखा, "9 महीने से भी कम समय में एचपीवी वैक्सीन की 1 करोड़ से ज्यादा डोज देने की भारत की कामयाबी सर्वाइकल कैंसर के खिलाफ लड़ाई में एक बड़ी कामयाबी है। मैं इस देशव्यापी कैंपेन को सफलतापूर्वक लागू करने में शामिल स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, राज्य सरकारों और सभी हेल्थकेयर प्रोफेशनल्स की तारीफ करता हूं।" उपराष्ट्रपति ने आगे लिखा, "प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, यह शानदार तरक्की सरकार के प्रिवेंटिव हेल्थकेयर को मजबूत करने, टीनएज लड़कियों की सुरक्षा करने और महिलाओं की पीढ़ियों के लिए एक हेल्दी भविष्य बनाने की लगातार प्रतिबद्धता को दिखाती है। एक हेल्दी भारत की ओर एक बड़ा कदम!"

बता दें कि फरवरी 2026 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किए गए इस राष्ट्रव्यापी अभियान के तहत सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों पर 14 वर्ष की किशोरियों को माता–पिता की



सहमति से मुत, सुरक्षित और स्वैच्छिक सिंगल–डोज एचपीवी टीकाकरण किया जाता है। इस अभियान के तहत लगभग 1.2 करोड़ बच्चियों के एचपीवी टीकाकरण का वार्षिक लक्ष्य था। अब तक लगभग 87 प्रतिशत वैक्सीनेशन किया जा चुका है। नौ महीने के अंदर 1 करोड़ से भी ज्यादा खुराक दी जा चुकी है। बीते शनिवार को केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करके लिखा था, "प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा लॉन्च किए जाने के नौ महीने से भी कम समय में राष्ट्रीय एचपीवी टीकाकरण अभियान ने बेटियों को सर्वाइकल कैंसर से बचाने की दिशा में यह ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। गुजरात, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, मिजोरम, मध्य प्रदेश और बिहार को 100 प्रतिशत कवरेज हासिल करने के लिए बधाई, जबकि 12 राज्यों ने 80 प्रतिशत का आंकड़ा पार कर लिया है।"(इनपुट–आईएएनएस)

2047 तक 26.5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का लक्ष्य : सीआईआई ने सुझाए 15 बड़े वित्तीय सुधार

नई दिल्ली, 22 नवम्बर।

भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) ने आगामी केंद्रीय बजट 2027–28 से पहले बैंकिंग, गैर–बैंकिंग वित्तीय क्षेत्र, पूंजी बाजार, बीमा और फिनटेक से जुड़े 15 प्रमुख सुधारों की सिफारिश की है। उद्योग संगठन का कहना है कि भारत को 2047 तक 26.5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए वित्तीय क्षेत्र की क्षमता और गहराई में व्यापक विस्तार करना होगा।

सीआईआई के अनुसार, 2047 तक 26.5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के लिए लगभग 106 ट्रिलियन डॉलर के वित्तीय परिसंपत्ति आधार की आवश्यकता होगी, जबकि वर्तमान में यह आकार लगभग 7 ट्रिलियन डॉलर है। संगठन का कहना है कि भारत के बैंकिंग तंत्र, पूंजी बाजार और बीमा क्षेत्र को आने वाले दो दशकों की जरूरतों के अनुरूप तैयार करना होगा। सीआईआई के महानिदेशक चंद्रजीत बनर्जी ने कहा कि भारतीय वित्तीय क्षेत्र फिलहाल मजबूत स्थिति में है। बैंकों और एनबीएफसी की बैलेंस शीट बेहतर हुई हैं तथा सरकार और नियामकों द्वारा हाल के वर्षों में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। अब चुनौती ऐसे वित्तीय तंत्र के निर्माण की है जो वर्तमान आकार से कई गुना बड़ी अर्थव्यवस्था को वित्तपोषित कर सके।

उद्योग संगठन ने एनबीएफसी के लिए नियम–आधारित स्थायी तरलता सुविधा, प्राथमिकता क्षेत्र ऋण (पीएसएल) ढांचे में बदलाव, कम क्रेडिट रेटिंग वाले कॉरपोरेट बॉन्ड्स के लिए निवेशक आधार बढ़ाने, ऋण वसूली के मामलों में बैंकों के समान अधिकार और राष्ट्रीय आपदा एवं जलवायु जोखिम बीमा पूल बनाने जैसे महत्वपूर्ण सुझाव दिए हैं। सीआईआई ने नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए प्राथमिकता क्षेत्र ऋण सीमा को 35 करोड़ रुपए से बढ़ाकर 80–100 करोड़ रुपए प्रति उधारकर्ता करने का सुझाव दिया है, ताकि मध्यम आकार की परियोजनाएं भी इसका लाभ उठा सकें।

इसके अलावा बैटरी पुनः उपयोग और रीसाइक्लिंग जैसी सर्कुलर इकॉनमी गतिविधियों को भी इस ढांचे में शामिल करने की सिफारिश की गई है। निर्यात क्षेत्र के लिए संगठन ने मौजूदा 2 प्रतिशत अतिरिक्त निर्यात ऋण सीमा के बजाय एक समर्पित निर्यात उप–लक्ष्य बनाने की मांग की है। इसके साथ फैक्टरिंग, एक्सपोर्ट रिसीवेबल्स और सप्लाई चेन फाइनेंस को भी पात्रता दायरे में लाने का सुझाव दिया गया है।

सीआईआई का अनुमान है कि देश में एमएसएमई क्षेत्र का क्रेडिट गैप 25–30 लाख करोड़ रुपए के बीच है। इसे कम करने के लिए संगठन ने सरकारी गारंटी वाले एमएसएमई ऋणों में आग, बाढ़, मशीनरी खराब होने और कारोबार बाधित होने से जुड़ी बीमा सुरक्षा को अनिवार्य बनाने की सिफारिश की है। इसके अलावा, वीडियो आधारित ग्राहक पहचान (वीडियो केवाईसी) के लिए एक नियामकीय ढांचा तैयार करने का सुझाव दिया गया है, जिसमें प्रमाणित डिजिटल प्रणालियों के माध्यम से पहचान सत्यापन किया जा सके। इससे विशेष रूप से कम सेवा वाले क्षेत्रों में ग्राहकों को जोड़ने की लागत कम होगी।

सीआईआई ने जलवायु जोखिम और प्रा.तिक आपदाओं से निपटने के लिए एक राष्ट्रीय पैरामीट्रिक बीमा योजना और जोखिम पूल बनाने का प्रस्ताव रखा है। इसमें प्राथमिक बीमा कंपनियों की अनिवार्य भागीदारी, गिट आईएफएससी के माध्यम से कैटास्ट्रॉफी बॉन्ड जारी करने और सरकारी पुनर्बीमा समर्थन का सुझाव शामिल है। संगठन ने यह भी सुझाव दिया है कि सितंबर 2025 से जीएसटी मुक्त किए गए व्यक्तिगत स्वास्थ्य और जीवन बीमा उत्पादों को "जीरो–रेटेड" किया जाए, ताकि बीमा कंपनियां इनपुट टैक्स क्रेडिट का लाभ प्राप्त कर सकें।

रिपोर्ट के अनुसार भारत का कॉरपोरेट बॉन्ड बाजार अभी भी सीमित है, जिसका आकार जीडीपी का लगभग 15 प्रतिशत है, जबकि चीन में यह 36 प्रतिशत और दक्षिण कोरिया में 80 प्रतिशत से अधिक है। सीआईआई ने पेंशन फंड, बीमा कंपनियों और भविष्य निधि संस्थाओं को नियंत्रित तरीके से एए से कम रेटिंग वाले बॉन्ड्स और लंबी अवधि वाले साधनों में निवेश की अनुमति देने की सिफारिश की है।

इसके साथ ही, संगठन ने निजी बैंकों में मतदान अधिकारों की सीमा को मौजूदा 26 प्रतिशत से बढ़ाकर 49 प्रतिशत तक करने का सुझाव दिया है, ताकि स्वामित्व और मतदान अधिकारों में संतुलन स्थापित हो सके। साथ ही सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में विदेशी निवेश सीमा को 20 प्रतिशत से बढ़ाकर 49 प्रतिशत करने के प्रस्ताव को जल्द मंजूरी देने की मांग की गई है।(इनपुट–आईएएनएस)

चंडीगढ़ इंटरनेशनल मैराथन में दौड़ा उत्साह का सैलाब, 11 देशों के 9,000 धावकों ने लिया हिस्सा

नई दिल्ली, 22 नवम्बर।

पंजाब के राज्यपाल और चंडीगढ़ के प्रशासक गुलाब चंद कटारिया ने रविवार को 'चंडीगढ़ इंटरनेशनल मैराथन' के दूसरे संस्करण को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस मैराथन में 42 किमी, 21 किमी, 10 किमी और 5 किमी की दौड़ शामिल हैं, जिसमें कई आईएएस अधिकारी 42 किमी और 21 किमी की श्रेणियों में हिस्सा ले रहे हैं।

पंजाब के राज्यपाल और केंद्र शासित प्रदेश के प्रशासक गुलाब चंद कटारिया ने कहा कि देखिए, चंडीगढ़ के लिए यह बड़े सौभाग्य की बात है कि आज हमारी दूसरी अंतरराष्ट्रीय मैराथन हो रही है। हमने पिछले साल भी इसका आयोजन किया था। तब इसमें कुल 3,500 के आसपास लोग शामिल हुए थे। आज, मुझे लगता है कि यह संख्या लगभग 9,000 होगी। यानी, इसमें लोगों की भागीदारी बढ़ी है; पूरे देश और दुनिया के 10–11 देशों से लोग इसमें हिस्सा ले रहे हैं। हमारे स्थानीय निवासी भी, भले ही 5 किलोमीटर की श्रेणी में कोई इनाम न हो, फिर भी इसमें दौड़े ताकि सभी स्वस्थ रहें।

माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया ने कहा कि चंडीगढ़ मैराथन का दूसरी बार सफल आयोजन सभी अधिकारियों और सहयोगी कर्मचारियों की कड़ी मेहनत का परिणाम है। इस वर्ष प्रतियोगिता में 11 देशों के धावकों ने हिस्सा लिया, जो शहर के लिए गर्व की बात है। उन्होंने बताया कि इस बार लगभग 360 प्रतिभागियों ने 42 किलोमीटर की मैराथन दौड़ में हिस्सा लिया। इतनी लंबी दूरी की दौड़ पूरी करना आसान नहीं होता और इसके लिए शारीरिक क्षमता के साथ–साथ दृढ़ इच्छाशक्ति और अनुशासन की भी जरूरत होती है।

उन्होंने विशेष रूप से एक भारतीय महिला एथलीट की भागीदारी पर गर्व जताया। कटारिया ने कहा कि खेलों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी देश के लिए सकारात्मक संकेत है। ऐसे आयोजन युवाओं को फिटनेस, अनुशासन और खेलों के प्रति प्रोत्साहित करते हैं। इस दौरान राज्यपाल ने प्रधानमंत्री



नरेंद्र मोदी की अपीलों और उनके प्रभाव को लेकर भी अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री की बातों का लोगों पर असर होता है। जब कोई व्यक्ति स्वयं उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपना जीवन जीता है, तो लोग स्वाभाविक रूप से उससे प्रेरित होते हैं और उसकी बातों का अनुसरण करते हैं।

अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए कटारिया ने वर्ष 1962 के भारत–चीन युद्ध का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि उस समय देश ने युद्ध में हार का सामना किया था। इसके बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की अपील पर देशभर के लोगों ने राष्ट्रहित में सहयोग दिया था। माताओं और बहनों ने भी देश की रक्षा के लिए अपने सोने के गहने तक दान कर दिए थे। कटारिया ने कहा कि यह उदाहरण बताता है कि जब देश का नेतृत्व किसी बड़े उद्देश्य के लिए लोगों से अपील करता है और स्वयं भी प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत करता है, तो आम नागरिक भी आगे आकर योगदान देते हैं। राज्यपाल ने चंडीगढ़ मैराथन को खेल संस्कृति और सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण आयोजन बताते हुए भविष्य में भी ऐसे आयोजनों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।(इनपुट–आईएएनएस)

हिंद–प्रशांत से पड़ोस तक, भारत की कूटनीति ने कई मोर्चों पर दिखाई ताकत

नई दिल्ली, 22 नवम्बर।

हिंद–प्रशांत क्षेत्र में रणनीतिक साझेदारी मजबूत करने, जापान के साथ रक्षा सहयोग को नई दिशा देने और नेपाल के साथ उच्चस्तरीय वार्ता की तैयारी के लिहाज से 16 से 22 नवंबर का सप्ताह भारत की कूटनीति के लिए काफी महत्वपूर्ण रहा। इस दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की फिलीपींस यात्रा, भारत–आसियान और पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में भागीदारी, प्रिंस विलियम और प्रिंसेस कैथरीन का अहम दौरा तथा टोक्यो में भारत–जापान की चौथी 2+2 मंत्रिस्तरीय वार्ता प्रमुख कूटनीतिक घटनाक्रम रहे। इन गतिविधियों ने हिंद–प्रशांत क्षेत्र से लेकर पड़ोसी देशों तक भारत की सक्रिय कूटनीतिक भूमिका और मजबूत होते अंतरराष्ट्रीय संबंधों को रेखांकित किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 16 और 17 नवंबर को फिलीपींस की राजधानी मनीला का दौरा किया। फिलीपींस के राष्ट्रपति फर्डिनेंड आर. मार्कोस जूनियर के निमंत्रण पर हुई इस यात्रा में उन्होंने 23वें भारत–आसियान शिखर सम्मेलन और 21वें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में हिस्सा लिया। भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति और हिंद–प्रशांत क्षेत्र के प्रति उसकी रणनीतिक .ष्टि के लिहाज से यह यात्रा महत्वपूर्ण रही।

भारत और आसियान ने 2026 को समुद्री सहयोग वर्ष के रूप में मनाया। शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी ने समुद्री संपर्क, आपदा प्रबंधन, तटरक्षक बलों के बीच सहयोग, समुद्री क्षेत्र की निगरानी और नाविकों की सुरक्षा के लिए दीर्घकालिक भारत–आसियान समुद्री सहयोग योजना का प्रस्ताव रखा। इसके अलावा साइबर फोरेंसिक प्रशिक्षण कार्यक्रम, परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में तकनीकी आदान–प्रदान, अंतरिक्ष हैकाथॉन और महत्वपूर्ण खनिजों के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने की पहल भी सामने आई।

भारत ने आसियान देशों के पर्यटकों के लिए मुत ई–वीजा की घोषणा की। युवाओं, स्टार्टअप, शिक्षा और सांस्कृतिक संपर्क को बढ़ावा देने के लिए भी कई प्रस्ताव रखे गए। पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में ऑनलाइन धोखाधड़ी और साइबर अपराधों से निपटने के लिए सहयोग पर जोर दिया गया। इस मंच पर समुद्री सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता भी चर्चा के प्रमुख विषय रहे।

मनीला यात्रा के दौरान मोदी ने फिलीपींस के राष्ट्रपति मार्कोस जूनियर के साथ द्विपक्षीय बातचीत भी की। दोनों नेताओं ने रक्षा, सुरक्षा, व्यापार, निवेश, अंतरिक्ष, रेलवे और डिजिटल वित्तीय प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में सहयोग की समीक्षा की। इससे भारत और फिलीपींस की रणनीतिक साझेदारी को व्यापक बनाने की दिशा में प्रयासों को बल मिला।

इसी सप्ताह भारत–यूके संबंधों में भी सस्टेनेबिलिटी और पर्यावरणीय नवाचार प्रमुख मुद्दा रहा। ब्रिटेन के प्रिंस विलियम और प्रिंसेस ऑफ वेल्स कैथरीन तीन दिवसीय यात्रा पर भारत आए। उनकी यात्रा का केंद्र मुंबई में आयोजित अर्थशॉट प्राइज 2026 समारोह रहा।

प्रिंस विलियम द्वारा स्थापित अर्थशॉट प्राइज जलवायु परिवर्तन, वायु प्रदूषण, कचरा प्रबंधन, महासागर संरक्षण और जैव विविधता जैसे वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियों के अभिनव समाधानों को मान्यता देता है। मुंबई में उन्होंने सस्टेनेबल ट्रांसपोर्ट, स्वच्छ ऊर्जा, जिम्मेदार विनिर्माण और पर्यावरण संरक्षण में भारत के काम को



करीब से देखा।

शाही दंपति ने मुंबई मेट्रो की सवारी की, सचिन तेंदुलकर के साथ गली क्रिकेट खेला, बांद्रा में महिंद्रा के इलेक्ट्रिक थ्री–व्हीलर की सवारी की और अर्थशॉट के 15 फाइनलिस्टों से मुलाकात की। भारत के दो फाइनलिस्ट – महिंद्रा लास्ट माइल मोबिलिटी और महिला हाउसिंग ट्रस्ट – ने स्वच्छ हवा और जलवायु लचीलेपन के क्षेत्र में अपने समाधानों को प्रस्तुत किया। महिंद्रा लास्ट माइल मोबिलिटी ने 'क्लीन अवर एयर' श्रेणी में अर्थशॉट प्राइज 2026 जीता।

नई दिल्ली में प्रधानमंत्री से मुलाकात में प्रिंस विलियम और कैथरीन ने जलवायु नवाचार और भारत–यूके व्यापक रणनीतिक साझेदारी पर चर्चा की। प्रधानमंत्री ने अर्थशॉट प्राइज के माध्यम से वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय समाधानों को बढ़ावा देने और भारत के योगदान को सामने लाने के प्रयासों की सराहना की। इस यात्रा ने भारत–यूके विजन 2035 के तहत स्वच्छ ऊर्जा, तकनीक, शिक्षा और निवेश में सहयोग को और मजबूत किया।

इस सप्ताह भारत की कूटनीतिक सक्रियता का एक और बड़ा केंद्र जापान रहा। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने 19 नवंबर को टोक्यो में जापान के विदेश मंत्री तोशिमित्सु मोतेगी और रक्षा मंत्री शिंजिरो कोइजुमी के साथ चौथी भारत–जापान 2+2 विदेश एवं रक्षा मंत्रिस्तरीय वार्ता में हिस्सा लिया।

बैठक में दोनों देशों ने हिंद–प्रशांत क्षेत्र में स्वतंत्र, खुले, समावेशी और नियम आधारित व्यवस्था बनाए रखने की प्रतिबद्धता दोहराई। दोनों पक्षों ने संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के सम्मान तथा विवादों के शांतिपूर्ण समाधान पर जोर दिया। साथ ही किसी भी देश की ओर से एकतरफा तरीके से यथास्थिति बदलने के प्रयासों से बचने की आवश्यकता बताई।

वार्ता में भारत की हिंद–प्रशांत महासागर पहल (आईपीओआई) और 'महासागर' दृष्टि के साथ जापान की 'फ्री एंड ओपन इंडो–पैसिफिक' रणनीति के बीच तालमेल बढ़ाने पर सहमति जताई गई। रक्षा और सुरक्षा सहयोग के साथ ऊर्जा सुरक्षा, आर्थिक सुरक्षा, तकनीक, नवाचार, समुद्री क्षेत्र, अंतरिक्ष और आतंकवाद जैसे मुद्दे भी बातचीत के केंद्र में रहे।

दोनों देशों ने रक्षा अभ्यासों और सैन्य संपर्क को और मजबूत करने पर संतोष जताया। जापान के लड़ाकू विमानों की पहली भारत यात्रा और 'वीर गार्जियन 26' वायुसेना अभ्यास को भी बढ़ते सैन्य सहयोग के संदर्भ में महत्वपूर्ण माना गया। इस वार्ता ने स्पष्ट किया कि भारत और जापान के रिश्ते अब केवल व्यापार और निवेश तक सीमित नहीं हैं, बल्कि क्षेत्रीय सुरक्षा और रक्षा तकनीक में भी उनका दायरा बढ़ रहा है।(इनपुट–आईएएनएस)

अदम्य साहस और बलिदान की प्रतीक झलकारी बाई की जयंती पर नेताओं ने दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली, 22 नवम्बर।

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगना एवं रानी लक्ष्मीबाई की सेना में महिला योद्धा दल 'दुर्गा दल' की साहसी योद्धा झलकारी बाई की जयंती पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सहित कई नेताओं ने उनको नमन किया है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर लिखा, "प्रथम स्वाधीनता संग्राम में महारानी लक्ष्मीबाई के साथ शौर्य और स्वाभिमान की अमर गाथा लिखने वाली वीरांगना झलकारी बाई कोरी की जयंती पर विनम्र श्रद्धांजलि। उनका साहस और संघर्ष युगों–युगों तक राष्ट्रभक्ति की ज्योति प्रज्वलित करता रहेगा।" राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने एक्स पोस्ट में लिखा, "1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगना एवं रानी लक्ष्मीबाई की सेना में महिला योद्धा दल 'दुर्गा दल' की साहसी योद्धा झलकारी बाई की जयंती पर उन्हें कोटिशः नमन! उनका अदम्य साहस, शौर्य और मातृभूमि के प्रति अटूट निष्ठा भारतीय इतिहास की अमूल्य विरासत है। उनका त्याग एवं बलिदान सदैव देशवासियों, विशेषकर नारी शक्ति को राष्ट्र सेवा और स्वाभिमान की रक्षा के लिए प्रेरित करता रहेगा।"

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने सोशल मीडिया पर लिखा, "1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अदम्य साहस, शौर्य और वीरता का परिचय देने वाली वीरांगना झलकारी बाई की जयंती पर सादर नमन करता हूं। रानी लक्ष्मीबाई के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करने वाली झलकारी बाई जी का अद्वितीय पराक्रम भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा।"

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा, "नारी शक्ति के अदम्य साहस, शौर्य और स्वाभिमान की प्रतीक महान वीरांगना झलकारी बाई की जयंती पर कोटि–कोटि नमन। रानी लक्ष्मीबाई की सेना में दुर्गा दल का नेतृत्व करते हुए उन्होंने अपने पराक्रम और रणकौशल से अंग्रेजी हुकूमत को चुनौती दी। उनका गौरवशाली जीवन हमारी बेटियों को साहस, स्वाभिमान और राष्ट्र सेवा की प्रेरणा देता रहेगा।"

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी ने सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा, "साहस की प्रतिमूर्ति, अदम्य वीरता की प्रतीक महान वीरांगना झलकारी बाई की जयंती पर कोटि–कोटि नमन। उनका



शौर्य, त्याग और मातृभूमि के प्रति अटूट समर्पण भारतीय इतिहास में सदैव स्वर्णिम अक्षरों में अंकित रहेगा।"

उत्तर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष पंकज चौधरी ने एक्स पर लिखा, "अदम्य साहस, अद्वितीय शौर्य और राष्ट्रभक्ति की प्रतीक महान वीरांगना रानी झलकारी बाई की जयंती पर शत–शत् नमन। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में उनका अतुलनीय पराक्रम, त्याग और मातृभूमि के प्रति समर्पण भारतीय इतिहास में सदैव अमर रहेगा।"

उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा, "प्रथम स्वाधीनता संग्राम में अपने अदम्य साहस और पराक्रम से नारी शौर्य की अमर गाथा लिखने वाली वीरांगना झलकारी बाई की जयंती पर उन्हें शत–शत नमन! मातृभूमि की रक्षा के लिए उन्होंने जिस अद्वितीय पराक्रम, त्याग और समर्पण का परिचय दिया, वह इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा।"

बिहार भाजपा अध्यक्ष संजय सरावगी ने एक्स पोस्ट में लिखा, "1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की वीरांगना, अदम्य साहस और शौर्य की प्रतीक झलकारी बाई की जयंती पर कोटि–कोटि नमन। रानी लक्ष्मीबाई की सेना के दुर्गा दल की वीर सेनानायक के रूप में उनका साहस, पराक्रम और मातृभूमि के प्रति समर्पण भारतीय इतिहास की अमूल्य धरोहर है। उनका जीवन और संघर्ष आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करता रहेगा।"बिहार सरकार में मंत्री विजय कुमार सिन्हा ने सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा, "रानी लक्ष्मीबाई की सेना 'दुर्गा दल' की सेनापति वीरांगना झलकारी बाई की जयंती पर शत् –शत् नमन!"(इनपुट–आईएएनएस)

नीलामी सूचना

हमारी निम्नलिखित शाखाओं से स्वर्ण आभूषण गिरवी रखकर गोल्ड लोन प्राप्त करने वाले कुछ व्यक्तियों/उधारकर्ताओं ने निर्धारित समयानुसार ऋण का भुगतान नहीं किया है। उन्हें/उनके वैधानिक उत्तराधिकारियों को भेजे गए सूचना/सूचनाओं का उचित उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है अथवा सूचनाएं अवितरित होकर वापस आ गई हैं।

ऐसी परिस्थितियों में यह निर्णय लिया गया है कि यदि संबंधित गोल्डलोन दिनांक **25.11.2026 को अपराह्न 4.00 बजे तक पूर्ण रूप से चुकता/समाप्त नहीं किए जाते हैं, तो गिरवी रखे गए स्वर्ण आभूषणों की सार्वजनिक नीलामी दिनांक 26.11.2026 को एसबीआई श्री विजयपुरम शाखा** में बिना किसी अतिरिक्त सूचना के की जाएगी।

इस संबंध में होने वाले सभी व्यय उधारकर्ता द्वारा वहन किए जाएंगे। बैंक को किसी भी समय नीलामी को स्थगित/रद्द करने अथवा बीच में रोकने का अधिकार सुरक्षित रहेगा।

सफल बोलीदाता को पूर्ण राशि का भुगतान कर आभूषणों का कब्जा प्राप्त करना होगा अथवा मौके पर बोली राशि का न्यूनतम 25 प्रतिशत जमा करना होगा तथा शेष राशि **7 दिनों के भीतर** जमा करनी होगी। भुगतान में चूक होने की स्थिति में बैंक प्रारंभिक जमा राशि को जब्त कर सकता है।

क्र.सं.	शाखा का नाम	ऋण खाता संख्या	स्वर्ण आभूषण का सकल वजन
1	**एसबीआई श्री विजयपुरम**	**44848864539**	**6.5**

दिनांक : 26.11.2026
स्थानः एसबीआई, श्री विजयपुरम

ह./–
प्राधिकृत अधिकारी
भारतीय स्टेट बैंक

चक्रवात 'अकवान' का असर कम, बंगाल में शुष्क रहेगा मौसम : मौसम विभाग

नई दिल्ली, 22 नवम्बर।

मौसम विभाग ने रविवार को बताया कि चक्रवात 'अकवान' के अवशेष अब सक्रिय नहीं हैं और इसका पश्चिम बंगाल के मौसम पर आगे कोई प्रभाव पड़ने की संभावना नहीं है। इसके चलते राज्य में मौसम मुख्य रूप से शुष्क रहेगा और ठंड बढ़ने के आसार हैं।

हालांकि, सोमवार तक दक्षिण बंगाल के कुछ जिलों में हल्की बारिश हो सकती है। इसके बाद तापमान में धीरे–धीरे गिरावट आएगी, जिससे सर्दी का असर बढ़ेगा। मौसम विभाग के अनुसार, चक्रवात 'अकवान' शनिवार को कमजोर होकर सामान्य निम्न दबाव के क्षेत्र में तब्दील हो गया था। यह उत्तरी छत्तीसगढ़ और आसपास के इलाकों में समुद्र तल से 4.5 किलोमीटर की ऊंचाई पर स्थित था।

मौसम विभाग के एक अधिकारी ने कहा, "चक्रवात के अवशेष धीरे–धीरे कमजोर पड़ रहे हैं। हालांकि, रविवार और सोमवार को दक्षिण बंगाल के कुछ जिलों में एक–दो स्थानों पर हल्की बारिश हो सकती है। कुल मिलाकर राज्य में मौसम शुष्क रहने



की संभावना है। बंगाल की खाड़ी में मछुआरों के लिए फिलहाल कोई नई चेतावनी जारी नहीं की गई है।"

इस बीच, उत्तरी बंगाल में मौसम की कोई नई चेतावनी जारी नहीं की गई है। हालांकि, सोमवार तक सभी जिलों में हल्की बारिश की संभावना है। इस बार राज्य के उत्तरी और दक्षिणी हिस्सों में तापमान धीरे–धीरे कम होने लगेगा। साथ ही, अगले दो दिनों में राज्य के तापमान में कोई बड़ा बदलाव नहीं होगा। अधिकारियों ने कहा कि मंगलवार से न्यूनतम तापमान में तीन से चार डिग्री सेल्सियस की गिरावट आ सकती है।

अधिकारी ने कहा, "कम दबाव का असर कम होने के कारण अब उत्तरी हवाओं के आने में कोई रुकावट नहीं है, जिससे रात में ठंड का अहसास होगा। मंगलवार से तापमान में और गिरावट आएगी।" रविवार सुबह कोलकाता में न्यूनतम तापमान 22.7 डिग्री सेल्सियस था, जो सामान्य से 4.4 डिग्री ज्यादा था। शनिवार को शहर में अधिकतम तापमान 25.2 डिग्री सेल्सियस था, जो सामान्य से 4.8 डिग्री कम था।

गुरु नानक देव के प्रकाश पर्व पर श्रद्धा का सफर : 1822 सिख श्रद्धालुओं का जत्था पाकिस्तान रवाना



नई दिल्ली, 22 नवम्बर।

गुरु नानक देव के प्रकाश पर्व के पावन अवसर पर पाकिस्तान स्थित ऐतिहासिक गुरुद्वारों के दर्शन के लिए 1822 सिख श्रद्धालुओं का जत्था शनिवार को अटारी–वाघा सीमा के रास्ते पाकिस्तान रवाना हुआ। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (एसजीपीसी) के कार्यालय से 'बोले सो निहाल, सत श्री अकाल' के जयकारों और ढोल–नगाड़ों की गूंज के बीच श्रद्धालुओं को धार्मिक उत्साह और श्रद्धा के साथ विदा किया गया। गुरुधामों के दर्शन को लेकर संगत में भारी उत्साह देखने को मिला।

एसजीपीसी के अनुसार, पाकिस्तान जाने के लिए कुल 1828 श्रद्धालुओं के पासपोर्ट वीजा के लिए भेजे गए थे। इनमें से पाकिस्तान दूतावास ने 1822 श्रद्धालुओं को वीजा जारी किया जबकि छह लोगों के आवेदन रद्द कर दिए गए। जत्थे की अगुवाई एसजीपीसी सदस्य बीबी परमिंदर कौर पार्टी लीडर के रूप में कर रही हैं। उनके साथ कार्यकारिणी सदस्य रविंदर सिंह खालसा, सदस्य गुरनाम सिंह जस्सल, बीबी गुरिंदर कौर भोलूवाला और जनरल प्रबंधक लखबीर सिंह चीफ–85 भी पाकिस्तान गए हैं।

यात्रा के दौरान श्रद्धालु सबसे पहले श्री ननकाना साहिब पहुंचेंगे, जो गुरु नानक देव जी का जन्मस्थान है। यहां गुरुद्वारा पट्टी साहिब और क्यारा साहिब सहित अन्य ऐतिहासिक गुरुधामों में नतमस्तक होंगे। इसके बाद जत्था गुरुद्वारा सच्चा सौदा, श्री पंजा साहिब, श्री करतारपुर साहिब और लाहौर स्थित गुरुद्वारा डेरा साहिब के दर्शन करेगा। धार्मिक यात्रा पूरी करने के बाद जत्था एक दिसंबर को अटारी–वाघा सीमा के रास्ते भारत लौटेगा।

एसजीपीसी सदस्य बीबी गुरिंदर कौर भोलूवाला ने कहा कि अपने ऐतिहासिक गुरुधामों के दर्शन करना हर सिख के लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने पाकिस्तान में गुरुद्वारों की प्राचीन इमारतों और गुरु साहिबान से जुड़ी निशानियों को सुरक्षित रखने की सराहना की। वहीं, श्रद्धालुओं ने दोनों देशों के बीच भाईचारे और शांति की कामना करते हुए बंदी सिंहों की रिहाई के लिए भी अरदास की।

पहली बार पाकिस्तान जा रहे धारीवाल के सेवा सिंह और सुल्तानपुर लोधी के गुरचरण सिंह ने इस यात्रा को अपना सौभाग्य बताया। हालांकि, कुछ श्रद्धालुओं ने बसों की रवानगी, समय–सारणी और पासपोर्ट वितरण की जानकारी समय पर नहीं मिलने पर नाराजगी भी जताई। उनका कहना था कि स्पष्ट जानकारी के अभाव में दूरदराज से आए यात्रियों और उनके परिजनों को परेशानी हुई। इसके बावजूद संगत में गुरुधामों के दर्शन को लेकर उत्साह बना रहा

मेमोरी चिप की बढ़ती लागत से महंगे होंगे स्मार्टफोन, साल के अंत तक 30% तक बढ़ सकती हैं कीमतें

नई दिल्ली, 22 नवम्बर।

भाषा मेमोरी चिप की लागत में तेज वृद्धि के कारण ज्यादातर कंपनियों के महंगे और उन्नत स्मार्टफोन की कीमतें इस साल के अंत तक 30 प्रतिशत से अधिक बढ़कर एक लाख रुपये के पार पहुंच सकती हैं। बाजार शोध कंपनी काउंटरपॉइंट ने शुक्रवार को यह अनुमान जताया।

कंपनी के अनुसार, स्मार्टफोन की कीमतें बढ़ने के साथ ही उपभोक्ताओं की अपेक्षाएं भी बढ़ रही हैं। वे फोन की प्रोसेसिंग गति, कैमरा, बैटरी, मजबूती और बिक्री के बाद मिलने वाली सेवाओं सहित अन्य सुविधाओं में बेहतर अनुभव चाहते हैं। काउंटरपॉइंट रिसर्च ने अपनी रिपोर्ट में कहा, "कुछ साल पहले भारत में एक लाख रुपये का स्मार्टफोन मिलना दुर्लभ था। आज महंगे स्मार्टफोन की कीमतें लगातार बढ़ने के साथ यह कीमत आम होती जा रही है। प्रीमियम श्रेणी के सबसे उन्नत स्मार्टफोन की कीमतें 2025 की तुलना में 2026 के अंत तक 30 प्रतिशत से अधिक बढ़ने का अनुमान है।" रिपोर्ट के मुताबिक, स्मार्टफोन की कुल सामग्री लागत में मेमोरी चिप की हिस्सेदारी 2025 की शुरुआत के करीब 13 प्रतिशत से बढ़कर अब 40 प्रतिशत से अधिक हो गई है।

मैथिल कोकिल महाकवि विद्यापतिः प्रेम, भक्ति, श्रृंगार और लोक चेतना के अमर शिल्पी

किसी कवि की अमरता केवल इतिहास में दर्ज उसके नाम से नहीं, बल्कि इस बात से तय होती है कि उसकी रचनाएं लोगों के जीवन में कितनी गहराई से रची–बसी हैं। महाकवि विद्यापति इस कसौटी पर खरे उतरने वाले विरले साहित्यकार हैं। उनके गीत राजदरबारों से निकलकर गांवों के घर–आंगन तक पहुंचे और पीढ़ियों की जुबान पर बस गए। उनके पदों में राधा–कृष्ण के प्रेम की मधुरता, विरह की मार्मिक पीड़ा, भगवान शिव के प्रति सहज समर्पण और मिथिला के लोक जीवन, संस्कारों तथा मानवीय संवेदनाओं का जीवंत चित्रण मिलता है। संस्कृत, अवहट्ट और मैथिली तीनों भाषाओं में लेखन करने वाले विद्यापति ने मैथिली को साहित्यिक प्रतिष्ठा दिलाई और मिथिला की सांस्कृतिक चेतना को व्यापक पहचान दी। वे केवल कवि नहीं, संस्कृत के प्रकांड विद्वान, चिंतक, इतिहास–बोध से संपन्न लेखक, धर्मशास्त्री और समाज के संवेदनशील अध्येता भी थे। 'मैथिल कोकिल' के नाम से प्रसिद्ध उनके पद आज भी मिथिला के घर–आंगन, विवाह–गीतों और संस्कारों, पूजा–अर्चना तथा लोकपरंपराओं में गूंजते हैं। उनकी रचनाएं केवल पढ़ी नहीं जातीं, बल्कि गाई और महसूस की जाती हैं तथा पीढ़ी–दर–पीढ़ी आगे बढ़ती हैं। यही लोक स्वीकृति उनकी साधना की उपलब्धि और अमरता का सच्चा प्रमाण है। उनका साहित्य आज भी भारतीय साहित्य और संस्कृति की अमूल्य धरोहर है।

मिथिला की धरती पर जन्म और विद्वत परिवार की विरासत

महाकवि विद्यापति ठाकुर का जन्म वर्तमान बिहार के मधुबनी जिले के बिस्फी गांव में एक प्रतिष्ठित मैथिल ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके जन्म और निधन की सटीक तिथियों को लेकर विद्वानों में मतभेद हैं। सामान्यतः उनका जीवन काल चौदहवीं सदी के मध्य से पंद्रहवीं सदी के मध्य तक माना जाता है। कुछ साहित्यिक स्रोत उनका जन्म लगभग 1352 ईस्वी में बताते हैं। उनके पिता गणपति ठाकुर संस्कृत के विद्वान, शिवभक्त और राजदरबार से जुड़े व्यक्ति थे। उनकी माता का नाम हांसिनी देवी बताया जाता है। परिवार में शास्त्र ज्ञान और विद्वता की परंपरा होने के कारण विद्यापति को बचपन से ही अध्ययन का अनुकूल वातावरण मिला। उन्होंने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट और मैथिली का गहन ज्ञान प्राप्त किया। उनकी असाधारण विद्वता ने ही उन्हें विद्यापति अर्थात विद्या का स्वामी जैसी पहचान दिलाई।

ओइनवार राजवंश और राजा शिव सिंह से आत्मीय संबंध

विद्यापति का जीवन मिथिला के ओइनवार राजवंश के शासन काल से जुड़ा रहा। उन्होंने राजा कीर्ति सिंह, देव सिंह, शिव सिंह और पद्म सिंह सहित कई शासकों के समय में साहित्यिक और राजकीय कार्य किए। राजा शिव सिंह उनके प्रमुख आश्रयदाता होने के साथ घनिष्ठ मित्र भी थे। रानी लखिमा देवी से भी उनका आत्मीय संबंध था। मान्यता है कि राजा शिव सिंह ने उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर उन्हें बिस्फी गांव ताम्रपत्र के माध्यम से दान में दिया था। दरबारी जीवन ने विद्यापति को राजनीति, शासन, कूटनीति और मानवीय व्यवहार को करीब से समझने का अवसर दिया। राजा शिव सिंह के समय राजनीतिक संघर्ष और बाहरी आक्रमणों के कारण मिथिला में अस्थिरता भी रही। शिव सिंह के बाद बदली परिस्थितियों में विद्यापति ने बनौली और पद्मा जैसे स्थानों पर भी समय बिताया तथा बाद में अपने गांव लौटे। उनके जीवन के ये प्रसंग बताते हैं कि वे केवल कल्पना लोक में विचरण करने वाले कवि नहीं थे, बल्कि अपने समय की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों के भी सजग साक्षी थे।

त्रिभाषी साहित्यकार : संस्कृत, अवहट्ट और मैथिली में योगदान

विद्यापति की सबसे बड़ी विशेषताओं में एक उनकी बहुभाषी प्रतिभा थी। उन्होंने संस्कृत, अवहट्ट और मैथिली में रचनाएं कीं। इन तीनों भाषाओं का प्रयोग उन्होंने अलग–अलग विषयों और पाठक वर्गों के लिए किया। संस्कृत में धर्म, नीति, व्यवहार और सामाजिक व्यवस्था से जुड़े ग्रंथ लिखे, जबकि अवहट्ट में तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों और राजदरबार का चित्रण किया। मैथिली में उन्होंने प्रेम, भक्ति और लोकजीवन को अभिव्यक्ति दी। उनकी प्रमुख रचनाओं में 'पुरुष परीक्षा', 'कीर्तिलता', 'कीर्तिपताका', 'भूपरिक्रमा', 'लिखनावली', 'गंगावाक्यावली', 'दानवाक्यावली', 'विभागसार' और 'दुर्गाभक्तितरंगिणी' शामिल हैं। 'पुरुष परीक्षा' में आदर्श मनुष्य के गुण, नैतिकता, विवेक और व्यवहार की चर्चा है। 'कीर्तिलता' में राजा कीर्ति सिंह के पराक्रम और तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का वर्णन मिलता है। 'कीर्तिपताका' भी अवहट्ट की महत्वपूर्ण रचना है। 'लिखनावली' में पत्र–लेखन और व्यावहारिक संवाद की परंपरा से जुड़े निर्देश मिलते हैं। इन रचनाओं से स्पष्ट होता है कि विद्यापति का ज्ञान केवल कविता तक सीमित नहीं था। वे इतिहास, धर्म, नीति और सामाजिक जीवन के भी गंभीर अध्येता थे।

'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' : मातृभाषा का सम्मान

विद्यापति की प्रसिद्ध उक्ति 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' उनकी भाषा संबंधी सोच को स्पष्ट करती है। इसका भाव है कि अपनी देशज भाषा सभी लोगों को प्रिय और मीठी लगती है। संस्कृत जैसी प्रतिष्ठित शास्त्रीय भाषा पर अधिकार होने के बावजूद उन्होंने मैथिली को अपनी रचनाओं का सशक्त माध्यम बनाया। उन्होंने साबित किया कि साहित्य की श्रेष्ठता केवल कठिन शब्दावली में नहीं, बल्कि आम लोगों के जीवन और भावनाओं को उनकी अपनी भाषा में व्यक्त करने में है। उनकी मैथिली में लोक जीवन की आत्मीयता, संगीत की लय और भावों की सहजता है। यही कारण है कि उनके गीत साहित्यिक पाठ तक सीमित नहीं रहे, बल्कि जनसामान्य की सांस्कृतिक विरासत बन गए।

पदावली : प्रेम, श्रृंगार और भक्ति का अद्भुत संगम

विद्यापति की सबसे लोकप्रिय साहित्यिक उपलब्धि उनकी मैथिली पदावली है। इसमें राधा–कृष्ण के प्रेम, मिलन, विरह, मान, अनुराग और प्रतीक्षा का अत्यंत संवेदनशील चित्रण मिलता है। उन्होंने राधा के मन की उलझन, संकोच, आकांक्षा, ईर्ष्या और प्रेम की बेचैनी को जिस स्वाभाविकता से अभिव्यक्त किया, वह उनकी काव्य प्रतिभा का प्रमाण है। उनके यहां प्रेम केवल शारीरिक आकर्षण नहीं, बल्कि आत्मीयता और समर्पण की अनुभूति भी है। विद्यापति के काव्य को लेकर साहित्यिक जगत में श्रृंगार और भक्ति के संबंध पर लंबे समय से चर्चा होती रही है। कुछ विद्वान उनके पदों में मानवीय प्रेम और सौंदर्य को प्रमुख मानते हैं, जबकि दूसरे उन्हें माधुर्य भक्ति की अभिव्यक्ति के रूप में देखते हैं। वास्तव में उनके साहित्य में दोनों भावों का सुंदर मेल है। राधा–ष्ण के प्रेम गीतों के साथ शिव, शक्ति और गंगा की आराधना से जुड़े पद भी उनकी धार्मिक चेतना को सामने लाते हैं।

जब महाकवि विद्यापति के सेवक बन गए स्वयं भगवान शिव

महाकवि विद्यापति के जीवन से जुड़ी सबसे भावपूर्ण और लोकप्रिय लोक कथाओं में भगवान शिव का उगना नामक सेवक के रूप में उनके घर आने का प्रसंग विशेष स्थान रखता है। मिथिला की लोक मान्यता है कि विद्यापति की अनन्य शिव भक्ति से प्रसन्न होकर स्वयं भगवान भोलेनाथ उनके सेवक बनकर रहने लगे। उगना नाम से परिचित इस सेवक की सादगी और सेवा–भाव के पीछे छिपे ईश्वरीय स्वरूप से विद्यापति अनजान थे। कथा के अनुसार, एक बार विद्यापति यात्रा पर थे। रास्ते में घने जंगल से गुजरते हुए उन्हें तेज प्यास लगी। आसपास कहीं पानी दिखाई नहीं दे रहा था। उन्होंने अपने सेवक उगना से पानी लाने को कहा। उगना कुछ दूर झाड़ियों के बीच गए और अपनी जटाओं से गंगाजल निकालकर ले आए। विद्यापति ने जैसे ही जल ग्रहण किया, उसके दिव्य स्वाद और पवित्रता से चकित रह गए। उन्हें संदेह हुआ कि यह कोई साधारण जल नहीं हो सकता। पूछताछ करने पर उगना के वास्तविक स्वरूप का रहस्य खुल गया। विद्यापति समझ गए कि जिनकी वे जीवन भर आराधना करते आए हैं, वे स्वयं महादेव उनके सेवक बनकर साथ चल रहे हैं। भगवान शिव ने विद्यापति से आग्रह किया कि वे इस रहस्य को किसी के सामने प्रकट न करें। लेकिन लोककथा के अनुसार, एक दिन घरेलू प्रसंग में पत्नी के साथ विवाद के दौरान विद्यापति के मुख से उगना की वास्तविक पहचान उजागर हो गई। वचन भंग होते ही भगवान शिव अंतर्धान हो गए। अपने आराध्य को खोकर विद्यापति व्याकुल हो उठे और उन्हें पुकारने लगे। लोक परंपरा में उनके प्रसिद्ध शिव भक्ति पद 'कखन हरब दुख मोर, हे भोलानाथ' को इसी विरह और पुकार से जोड़कर देखा जाता है। यह कथा ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित घटना नहीं, बल्कि मिथिला की गहरी शिव भक्ति, लोक विश्वास और सांस्कृतिक स्मृति का अभिन्न हिस्सा है। इसमें भक्त और भगवान के बीच का संबंध केवल आराधना का नहीं, बल्कि प्रेम, विश्वास और आत्मीयता का दिखाई देता है। यही कारण है कि उगना की कथा आज भी मिथिला के जनमानस में इतनी श्रद्धा और भावुकता के साथ सुनाई जाती है।

लोक जीवन, संगीत और स्त्री संवेदना के सशक्त रचनाकार

विद्यापति के गीतों में मिथिला का सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन जीवंत दिखाई देता है। विवाह, गौना, पर्व–त्योहार, देवी–पूजन, ऋतु परिवर्तन और पारिवारिक संबंधों के अनेक प्रसंग उनकी रचनाओं में मिलते हैं। उनके पदों में स्त्री मन की भावनाओं को विशेष स्थान मिला है। उन्होंने महिलाओं की इच्छाओं, संकोच, प्रतीक्षा और प्रेम की अनुभूतियों को संवेदनशीलता से स्वर दिया। इस दृष्टि से उनका साहित्य मध्यकालीन समाज में स्त्री की भावनात्मक दुनिया को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम है। उन्हें 'मैथिल कोकिल' कहा जाता है। उनके गीतों की मधुरता और गेयता इस उपाधि को सार्थक बनाती है। 'जय–जय भैरवि असुर भयाउनी' जैसा देवी स्तुति पद आज भी मिथिला के सांस्कृतिक आयोजनों में लोकप्रिय है। विद्यापति के गीत विवाह और मांगलिक अवसरों पर पीढ़ी–दर–पीढ़ी गाए जाते रहे हैं। 'विद्यापति नाच' जैसी लोकनाट्य परंपरा ने भी उनके साहित्य को मंच और लोककला से जोड़कर जीवित रखा है।

पूर्वी भारत की साहित्यिक परंपरा पर व्यापक प्रभाव

विद्यापति की लोकप्रियता मिथिला तक सीमित नहीं रही। उनके पदों का प्रभाव बंगाल, असम, ओडिशा और नेपाल की साहित्यिक तथा वैष्णव भक्ति परंपराओं तक पहुंचा। विशेष रूप से बंगाल में चैतन्य महाप्रभु की भक्ति परंपरा में उनके गीतों का गायन लोकप्रिय रहा। उनकी काव्य शैली, संगीतात्मकता और राधा–कृष्ण प्रेम का चित्रण बाद के अनेक कवियों के लिए प्रेरणा बना। अलग–अलग क्षेत्रों में उनकी पदावली के प्रसार के कारण उनके नाम से कई पद प्रचलित हुए, जिनकी प्रामाणिकता को लेकर साहित्यिक शोध भी हुआ। आधुनिक साहित्यिक अध्येताओं ने भी उनकी काव्य प्रतिभा को महत्वपूर्ण स्थान दिया।

मिथिला की पहचान और भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहर

महाकवि विद्यापति उस विरल साहित्यिक परंपरा के प्रतिनिधि हैं, जहां शास्त्रीय विद्वता और लोकभाषा एक–दूसरे के पूरक बनते हैं। उन्होंने मैथिली को साहित्यिक गौरव दिलाया और प्रेम, भक्ति, श्रृंगार तथा लोक जीवन को अपनी रचनाओं में ऐसा स्थान दिया, जो सदियों बाद भी प्रासंगिक है। उनका साहित्य केवल कविता का संसार नहीं, बल्कि मध्यकालीन मिथिला के इतिहास, समाज, संस्कृति, आस्था और जीवन मूल्यों का भी दस्तावेज है। आज भाषाओं और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की चर्चा के बीच उनका संदेश और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। उन्होंने सिखाया कि अपनी मातृभाषा में व्यक्त भावनाएं भी व्यापक मानवीय अनुभवों को स्वर दे सकती हैं। सचमुच, विद्यापति केवल मिथिला के गौरव नहीं, बल्कि भारतीय साहित्य की ऐसी अमर आवाज हैं, जिनके गीतों में आज भी मिथिला की आत्मा धड़कती है।